Quick word tests

तरक़्क़ी	तरक़्की	आह्लाद	आह्नाद	फ्रीज	फ्रीज	मग्ज	मग्ज	हृत्स्थल	हत्स्थल	सिर्फ	सिर्फ
ज़्यादा	ज़्यादा	ब्राह्मण	ब्राह्मण	ह्रितिक	ह्रितिक	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान	ज्योत्स्रा	ज्योत्स्ना	व्हिस्की	व्हिस्की
मन्ज़ूर	मन्जूर	मिस्त्री	मिस्त्री	एल्ज़े	एल्जे	दिग्दर्शन	दिग्दर्शन	ईषत्स्पृष्ट्	ईषत्स्पृष्ट्	इश्क़	इश्क
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान	दुष्प्रह्य	दुष्प्रह्य	उत्त्य	उत्त्य	पंक्ति	पंक्ति	उत्स्रुत	उत्स्रुत	प्रश्न	प्रश्न
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार	अद्भुत	अद्भुत	उत्य	उत्य	मंगलवार	मंगलवार	सद्गति	सद्गति	रुश्द	रुश्द
छुट्टी		इल्ज़ाम	इल्जाम	रत्न	रत्न	दुर्लंघ्य	दुर्लंघ्य	सद्गन्थ	सद्ग्रन्थ	वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अक्षरे	अक्षरे	सज़्स	सज़्स	पच्चीस	पच्चीस	उद्घाटन	उद्घाटन	ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	ज्ञान	ज्ञान	एज्जा	एज्जा	अच्छा	अच्छा	ज़िद्दी	ज़िद्दी	मिस्त्री	मिस्त्री
दर्ष्टांत	दर्षांत	मौके	मीके	ब्यर्थे	ब्यर्थे	उज्ज	उज्ज	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	आह्वान	आह्वान
चिट्ठी	चिट्ठी	कैंटोमेंट	कैंटोमेंट	तरक़्क़ी	तरक़्क़ी	संस्कृत	संस्कृत	उद्बोध	उद्बोध	आह्लाद	आह्नाद
वाङ्मय	वाङ्मय	छूट कुछ	छूट कुछ	फ्रैक्चर	फ्रैक्चर	हिंस्र	हिंस्र	द्रव	द्रव	ह्रास	ह्रास
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य	करेंट	करेंट	डॉक्टर	डॉक्टर	छुट्टी	छुट्टी	दारिद्य	दारिद्र्य	अंकुड़ा	अंकुड़ा
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना	राष्ट्रून	राष्ट्रुन	इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन	चिट्ठी	चिट्ठी	अध्रुव	अध्रुव	अंतर्निहित	अंतर्निहित
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	कॉफी	कॉफी	रक्त	रक्त	विशाखपट्नम	विशाखपट्नम	मंज़ूर	मंज़ूर	अन्तः	अन्त:
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	हिंदू-मुस्लिम	हिंदू-मुस्लिम	वक्ल	वक्त्र	ट्रैन	ट्रैन	मंत्री	मंत्री	अंतर्वेशन	अंतर्वेशन
सान्ध्य	सान्ध्य	करणाऱ्या	करणाऱ्या	युक्त्यभास	युक्त्यभास	सुपाठ्य	सुपाठ्य	स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य	अग्नि	अग्नि
इज़त	इज़्जत	स्नेह	स्नेह	वक्फ़	वक्फ	लड्डू	लड्डू	द्वंद्व	द्वंद्व	अद्भुत	अद्भुत
उज्ज्वल	उञ्चल	श्री	श्री	शुक्ल	शुक्ल	ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य	उन्नीस	उन्नीस	छुछुंदर	छुछंदर
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा	स्त्री	स्त्री	रिक्शा	रिक्शा	उत्क्रम	उत्क्रम	इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट	हुंकार	हुंकार
इकत्तीस	इकत्तीस	ध्ड्यां	ध्ड्यां	पक्ष	पक्ष	उत्क्षेप	उत्क्षेप	उन्हें	उन्हें	हित इच्छुक	हित इच्छुक
सत्रह	सत्रह	शक्ति	शक्ति	लक्ष्मी	लक्ष्मी	विद्युत्प्रहक	विद्युत्ग्रहक	दीन्ह्यो	दीन्ह्यो	कुर्री	कुर्री
पद्म	पदा	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अभक्ष्य	अभक्ष्य	महत्त्व	महत्त्व	नैप्स्यून	नैप्स्यून	कुल्हिया	कुल्हिया
विद्यार्थी	विद्यार्थी	कटू	कटू	दिक्स्थापन	दिक्स्थापन	पत्थर	पत्थर	प्राप्त	प्राप्त		
उन्नीस	उन्नीस	रूप	रूप	सख़्त	संख्त	विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी	सब्ज़ी	सब्जी		
पश्चिम	पश्चिम	इंद्र	हूँ	अख्त्यार	अख्त्यार	पत्नी	पत्नी	छब्बीस	छब्बीस		
श्रीलंका	श्रीलंका	बुत्तो	बुत्तो	ज़ख़्म	ज़ख़्म	सपत्य	सपत्न्य	मार्किट	मार्किट		
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय	बार्गी	बार्गी	ख्रिष्टां	ख्रिष्टां	उत्प्रवास	उत्प्रवास	दुर्ज़ेय	दुर्ज्ञेय		
स्नान	स्नान	कुंग	कुंग	फ़रव्र	फ़ख	ल्या हिक	त्र्याहिक	उर्दू	उर्दू		
बुद्ध	बुद्ध	हूप	हूप	अग्ग्रास	अग्ग्रास	विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति	निर्द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व		

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्भवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।। अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्गवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ ॥ अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यृह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की याला करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यालाएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धित होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दृष्कर्म सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दष्कर्म

119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date:Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date:Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेंट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्य्1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यु 1 दनिया का पहला वाटरप्रुफ और शॉकप्रुफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मुविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंटास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीड़ी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रांड फैशन इंवेट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

गीरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट।।

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डील डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी निद्यों में रेत और फूल फिलयाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करैं। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी किहए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झूँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं।।

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं।।

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-वाप और सब घर के लोग कुँवर उदेभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदेभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

Consonant spacing

पपकपवपवकवव पपखपवपवखवव पपगपवपवगवव पपघपवपवघवव पपङपवपवङवव पपचपवपवचवव पपछपवपवछवव पपजपवपवजवव पपझपवपवझवव पपञपवपवञवव पपटपवपवटवव पपठपवपवठवव **uusuauasaa** पपढपवपवढवव पपणपवपवणवव पपतपवपवतवव पपथपवपवथवव पपदपवपवदवव पपधपवपवधवव पपनपवपवनवव **uuuuauauaa** पपफपवपवफवव पपबपवपवबवव पपभपवपवभवव **чинчачанаа** पपयपवपवयवव पपरपवपवरवव पपलपवपवलवव पपळपवपवळवव **uuauauaaa** पपशपवपवशवव **uuuuauauaa** पपसपवपवसवव

पपहपवपवहवव
पपकपवपवक्रवव
पपखपवपवख़वव
पपग़पवपवग़वव
पपज़पवपवज़वव
पपज़पवपवज़वव
पपड़पवपवड़वव
पपढ़पवपवढ़वव
पपफ़पवपवक़वव
पपफ़पवपवक़वव
पपम्रपवपवक़वव
पपसपवपवस्वव
पपझपवपवझवव
पपझपवपवझवव

Vowel spacing

पपअपवपवअवव पपञ्जेपवपवञ्जेवव पपॲपवपवॲवव पपइपवपवइवव पपर्डपवपवर्डवव **पपउपवपव**उवव पपऊपवपवऊवव **чч**ए**ч**वपवएवव पपऐपवपवऐवव पपऍपवपवऍवव पपऐपवपवऐवव पपआपवपवआवव पपओपवपवओवव पपऔपवपवऔवव ччжчачажаа पपऋपवपवऋवव पपल्पवपवल्वव पपॡपवपवॡवव

Rakar spacing

पपक्रपवपवक्रवव

पपख्रपवपवख्रवव

पपग्रपवपवग्रवव पपञ्चपवपवञ्चवव पपङ्गपवपवङ्गवव पपच्चपवपवच्चवव पपछुपवपवछुवव पपज्रपवपवज्रवव पपझपवपवझवव पपञ्जपवपवञ्जवव पपट्रपवपवट्रवव **чидчачадаа** पपडूपवपवडूवव पपढूपवपवढूवव पपण्रपवपवण्रवव पपत्रपवपवत्रवव पपथ्रपवपवथ्रवव पपद्रपवपवद्रवव पपभ्रपवपवभ्रवव पपन्रपवपवन्नवव **ч**чучачауаа पपफ्रपवपवफ्रवव पपब्रपवपवब्रवव पपभ्रपवपवभ्रवव पपम्रपवपवम्रवव पपय्रपवपवय्रवव पपरूपवपवरूवव पपत्रपवपवत्रवव पपव्रपवपवव्रवव पपश्रपवपवश्रवव पपष्रपवपवष्रवव पपस्रपवपवस्रवव पपह्रपवपवह्नवव

पपळूपवपवळूवव पपक्षपवपवक्षवव पपञ्चपवपवज्ञवव

Conjunct spacing

पपक्तपवपवक्तवव पपदूपवपवदूवव पपद्रपवपवद्रवव पपड्यपवपवड्यवव पपज्जपवपवज्जवव पपज्थपवपवज्थवव पपज्यपवपवज्यवव पपज्सपवपवज्सवव पपछ्यपवपवछ्यवव पपट्यपवपवट्यवव पपठ्यपवपवठ्यवव पपड्यपवपवड्यवव पपढ्यपवपवढ्यवव पपट्टपवपवट्टवव पपटूपवपवटूवव पपठूपवपवठूवव पपड्डपवपवड्डवव पपड्टपवपवडूवव पपढ्रपवपवढूवव पपत्तपवपवत्तवव पपत्खपवपवत्खवव पपत्थपवपवत्थवव पपत्नपवपवत्नवव पपत्सपवपवत्सवव पपत्यपवपवत्यवव पपद्धपवपवद्धवव पपद्गपवपवद्गवव पपद्वपवपवद्भवव पपद्धपवपवद्भवव

पपद्वपवपवद्ववव पपद्धपवपवद्धवव पपद्ध्यपवपवद्ध्यवव पपद्मपवपवद्मवव पपद्ध्यपवपवद्ध्यवव पपद्दपवपवद्दवव पपश्चपवभवव पपन्मपवपवन्मवव पपल्जपवपवल्जवव पपल्थपवपवल्थवव पपत्भपवपवत्भवव पपल्मपवपवल्मवव पपल्यपवपवल्यवव पपत्मपवपवत्मवव पपद्यपवपवद्यवव पपभपवपवभवव पपष्टपवपवष्टवव पपल्जपवपवल्जवव **uuguauagaa** पपत्भपवपवत्भवव पपह्नपवपवह्नवव पपह्नपवपवह्नवव पपह्मपवपवह्मवव पपह्यपवपवह्यवव पपह्लपवपवह्लवव पपह्नपवपवह्नवव

U/Uu variant spacing

पपहुपवपवहुवव पपहूपवपवहूवव पपहृपवपवहृवव पपहृपवपवहृवव पपहृपवपवहुवव पपहृपवपवहुवव पपहृपवपवहृवव

पपरुपवपवरुवव पपरूपवपवरूवव पपदुपवपवदुवव पपदूपवपवदूवव पपदूपवपवदूवव पपदुपवपवदृवव

Vowel sign spacing

पपपंपपरंपपकंपप

पपपापपरापपकापप पपपिपपरिपपकिपप पपपीपपरीपपकीपप पपपींपपरींपपकींपप पपपींपपरींपपकींपप पपपाँपपराँपपकाँपप पपपाँपपराँपपकाँपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपौपपरौपपकौपप पपपौंपपरौंपपकौंपप पपपौंपपरौंपपकौंपप

पपपुपपरुपपकुपप पपपूपपरूपपकृपप पपपृपपरृपपकृपप पपपूपपरूपपकृपप पपपूपपरूपपकृपप पपपूपपरूपपकृपप

पपर्पपपर्पपर्कपप पपर्पपपर्रपपर्कपप पपर्पपपर्रपपर्कपप

पपपऽपवपववऽवव पप?पवपव?वव पपप:पवपवव:वव **Numeral spacing**

Letter-punct spacing

पपक, पवक. पपख, पवख. पपग, पवग. पपघ, पवघ. पपङ. पवङ. पपच, पवच. पपछ, पवछ. पपज, पवज. पपझ, पवझ. पपञ, पवञ. पपट, पवट. पपठ, पवठ. पपड, पवड. पपढ, पवढ. पपण, पवण. पपत, पवत. पपथ, पवथ. पपद, पवद. पपध, पवध.

पपन, पवन.

पपप, पवप.

पपफ, पवफ. पपब, पवब. पपभ, पवभ. पपम, पवम. पपय, पवय. पपर, पवर. पपल, पवल. पपळ, पवळ. पपव, पवव. पपश, पवश.

पपष, पवष. पपस, पवस. पपह, पवह. पपक़, पवक़. पपख़, पवख़. पपग़, पवग़. पपज़, पवज़. पपढ़, पवड़. पपढ़, पवढ़. पपफ़, पवफ़.

पपय़, पवय़.

पपक्ष, पवक्ष.

पपज्ञ, पवज्ञ. पपअ, पवअ. पपअ, पवअ. पपअ, पवअ. पपइ, पवइ. पपई, पवई. पपउ, पवउ. पपऊ, पवऊ. पपफ, पवए.

पपऐ. पवऐ.

पपऍ, पवऍ.

पपऎ, पवऎ.

पपआ, पवआ. प्र पपओ, पवओ. प्र पपऔ, पवऔ. प्र पपऋ, पवऋ. प्र पपऋ, पवऋ. प्र पपॡ, पवॡ. प्र पपॡ, पवॡ.

पपङ्ग, पवङ्ग. पपछ्ग, पवछ्र. पपट्र, पवट्र. पपट्र, पवट्र. पपड्र, पवड्र. पपढ्र, पवढ्र. पपर्र, पवर्र. पपर्स, पवस्र. पपळ्, पवळ्र.

पपक्त, पवक्त.

पपदू, पवदू. पपदू, पवटू. पपटू, पवटू. पपट्ठ, पवट्ठ. पपट्ठ, पवट्ठ. पपड्ड, पवड्ड. पपड्ड, पवड्ड. पपद्ध, पवद्ध. पपद्स, पवद्स. पपद्स, पवद्स. पपद्स, पवद्स. पपद्स, पवद्स.

पपद्ध, पवद्ध.

पपह्न, पवह्द. पपष्ट, पवष्ट. पपल्ज, पवल्ज. पपष्ठ, पवष्ठ. पपल्भ, पवल्भ. पपह्न, पवह्न. पपह्न, पवह्न. पपह्न, पवह्न. पपह्न, पवह्न.

पपहु, पवहु. पपहू, पवहू. पपहृ, पवहू. पपहु, पवहु. पपहू, पवहू. पपरू, पवरू. पपरु, पवरू. पपरु, पवदु. पपदू, पवदू. पपदू, पवदू.

पपख; पवख: पपग; पवग: पपघ; पवघ: पपङ; पवङ: पपच; पवच: पपछ; पवछ: पपज; पवज: पपझ; पवझ: पपअ; पवझ:

पपट: पवट:

पपठः पवठः

पपकः पवकः

पपड; पवड:	पपॲ; पवॲ:	पपड्ढ; पवड्ढ:	पपघ। पवघ:	पपड़। पवड़:	पपह्न। पवह्नः	पपरू। पवरू:
पपढ; पवढ:	पपइ; पवइ:	पपड्डु; पवड्डु:	पपङ। पवङः	पपढ़। पवढ़:	पपळू। पवळू:	पपदु। पवदुः
पपण; पवण:	पपई; पवई:	पपढूँ; पवढूँ:	पपच। पवच:	पपफ़। पवफ़:		पपदूँ। पवदूँ:
पपत; पवत:	पपउ; पवउ:	पपद्धः, पवद्धः	पपछ। पवछ:	पपय्र। पवयः	पपक्त। पवक्तः	पपदृ। पवदृः
पपथ; पवथ:	पपऊ; पवऊ:	पपद्ग; पवद्ग:	पपज। पवजः	पपक्ष। पवक्षः	पपदू। पवदूः	
पपद; पवद:	पपए; पवए:	पपद्धः, पवद्धः	पपझ। पवझ:	पपज्ञ। पवज्ञः	पपदृ। पवदृः	-
पपधः; पवधः	पपऐ; पवऐ:	पपद्भः, पबद्भः	पपञ। पवञ:		पपट्टे। पवट्टेः	पपक! पवक?
पपन; पवन:	पपऍ; पवऍ:	पपद्व; पवद्व:	पपट। पवट:	पपअ। पवअ:	पपट्टॅ। पवट्टॅ:	पपख! पवख?
पपप; पवप:	पपऎ; पवऎ:	पपद्ध; पवद्धः	पपठ। पवठ:	पपञ्जे। पवञ्जे:	पपठ्ठ। पवठ्ठः	पपग! पवग?
पपफ; पवफ:	पपआ; पवआ:	पपद्दं; पवद्दं:	पपड। पवड:	पपॲ। पवॲ:	पपडूँ। पवडूँ:	पपघ! पवघ?
पपब; पवब:	पपओ; पवओ:	पपष्टं; पवष्टं:	पपढ। पवढ:	पपइ। पवइ:	पपडूँ। पवडूँ:	पपङ! पवङ?
पपभ; पवभ:	पपऔ; पवऔ:	पपल्जः; पवल्जः	पपण। पवण:	पपई। पवई:	पपढूँ। पवढूँ:	पपच! पवच?
पपम; पवम:	पपऋ; पवऋ:	पपष्ठ; पवष्ठ:	पपत। पवत:	पपउ। पवउ:	पपद्धै। पवद्धैः	पपछ! पवछ?
पपय; पवय:	पपऋ; पवऋ:	पपल्भ; पवल्भ:	पपथ। पवथ:	पपऊ। पवऊ:	पपद्गं। पवद्गः	पपज! पवज?
पपर; पवर:	पपलः; पवलः:	पपह्न; पवह्नः	पपद। पवदः	पपए। पवए:	पपढूँ। पवद्धः	पपझ! पवझ?
पपल; पवल:	पपॡ; पवॡ:	पपह्नं; पवह्नं:	पपध। पवधः	पपऐ। पवऐ:	पपद्ध। पवद्धः	पपञ! पवञ?
पपळ; पवळ:		पपह्न; पवह्नः	पपन। पवन:	पपऍ। पवऍ:	पपद्व। पवद्वः	पपट! पवट?
पपव; पवव:		पपह्नं; पवह्नं:	पपप। पवप:	पपऎ। पवऎ:	पपद्ध। पवद्धः	पपठ! पवठ?
पपशः; पवशः	पपङ्ग; पवङ्ग:	•••	पपफ। पवफ:	पपआ। पवआ:	पपद्द। पवद्दः	पपड! पवड?
पपषः, पवषः	पपछ्र; पवछ्र:	पपहु; पवहुः	पपब। पवब:	पपओ। पवओ:	पपष्टे। पवष्टेः	पपढ! पवढ?
पपसं; पवसः	पपट्र; पवट्रः	पपहूँ; पवहूँ:	पपभ। पवभ:	पपऔ। पवऔ:	पपल्ज। पवल्जः	पपण! पवण?
पपहः, पवहः	पपठ्र; पवठ्र:	पपहुँ; पवहूः	पपम। पवम:	पपऋ। पवऋ:	पपष्ठ। पवष्ठः	पपत! पवत?
पपकः; पवकः	पपड्र; पवड्र:	पपहूँ; पवहूँ:	पपय। पवय:	पपऋ। पवऋ:	पपत्भ। पवत्भः	पपथ! पवथ?
पपख़; पवख़:	पपढ्र; पवढ्र:	पपहुँ; पवहुँ:	पपर। पवर:	पपल्। पवलः	पपह्न। पवह्नः	पपद! पवद?
पपग़; पवग़:	पपद्र; पवद्र:	पपहूँ; पवहूँ:	पपल। पवलः	पपॡ। पवॡ:	पपह्न। पवह्नः	पपधः! पवधः?
पपज़; पवज़:	पपर्; पवर्:	पपरु; पवरु:	पपळ। पवळ:		पपह्नं। पवह्नः	पपन! पवन?
पपड़; पवड़:	पपह्न; पवह्न:	पपरू; पवरू:	पपव। पवव:		पपह्न। पवह्नः	पपप! पवप?
पपढ़; पवढ़:	पपळ्र; पवळ्र:	पपदु; पवदुः	पपश। पवश:	पपङ्ग। पवङ्रः	(4- (4	पपफ! पवफ?
पपफ़; पवफ़:		पपदूँ; पवदूँ:	पपष। पवष:	पपछ्र। पवछ्रः	पपहु। पवहुः	पपब! पवब?
पपय़; पवय़:	पपक्तः; पवक्तः	पपर्दुः पवदृः	पपस। पवसः	पपट्र। पवट्रः	पपहूँ। पवहूँ:	पपभ! पवभ?
पपक्ष; पवक्ष:	पपदू; पवदू:	c. c	पपह। पवहः	पपठ्र। पवठ्र:	पपहृ। पवहः	पपम! पवम?
पपज्ञ; पवज्ञ:	पपदृ; पवदृ:	-	पपक्र। पवकः	पपड्र। पवड्रः	पपहृ। पवहूः	पपय! पवय?
	पपट्ट; पवट्टः	पपक। पवकः	पपख। पवख:	पपद्र। पवद्रः	पपहुँ। पवहुः	पपर! पवर?
पपअ; पवअ:	पपट्ठ; पवट्ठ:	पपख। पवख:	पपग़। पवग़:	पपद्र। पवद्रः	पपहूं। पवहूं:	पपल! पवल?
पपञ्जै; पवञै:	पपठ्ठ; पवठ्ठ:	पपग। पवगः	पपज्ञ। पवज्ञः	पपर्। पवर्ः	पपरु। पवरु:	पपळ! पवळ?
•		-	• • •		· •	-

पपव! पवव?	पपङ्र! पवङ्र?		पपफ-फपव	पपआ-आपव	पपद्द-द्दपव	"डपवपड"
पपश! पवश?	पपछ्र! पवछ्र?	पपहु! पवहु?	पपब-बपव	पपओ-ओपव	पपष्ट-ष्टपव	"ढपवपढ"
पपष! पवष?	पपट्र! पवट्र?	पपहूँ! पवहूँ?	पपभ-भपव	पपऔ-औपव	पपल्ज-ल्जपव	"णपवपण"
पपस! पवस?	पपठ्र! पवठ्र?	पपहें! पवहें?	पपम-मपव	पपऋ-ऋपव	पपष्ठ-ष्ठपव	"तपवपत"
पपह! पवह?	पपड्र! पवड्र?	पपहॄ! पवहॄ?	पपय-यपव	पपऋ-ऋपव	पपत्भ-त्भपव	"थपवपथ"
पपक़! पवक़?	पपढ्र! पवढ्र?	पपहु! पवहु?	पपर-रपव	पपल-लपव	पपह्ल-ह्लपव	"दपवपद"
पपख़! पवख़?	पपद्र! पवद्र?	पपहूँ! पवहूँ?	पपल-लपव	पपॡ-ॡपव	पपह्न-ह्नपव	"धपवपध"
पपग़! पवग़?	पपरू! पवरू?	पपरुं! पवरुं?	पपळ-ळपव		पपह्ल-ह्लपव	"नपवपन"
पपज़! पवज़?	पपह्न! पवह्न?	पपरू! पवरू?	पपव-वपव		पपह्न-ह्नपव	"पपवपप"
पपड़! पवड़?	पपळू! पवळू?	पपदु! पवदु?	पपश-शपव	पपङ्र-ङ्रपव		"फपवपफ"
पपढ़! पवढ़?		पपदूं! पवदूँ?	पपष-षपव	पपछ्र-छ्रपव	पपहु-हुपव	"बपवपब"
पपफ़! पवफ़?	पपक्त! पवक्त?	पपदृं! पवदृं?	पपस-सपव	पपट्र-ट्रपव	पपहूँ-हूँपव	"भपवपभ"
पपय़! पवय़?	पपदू! पवदू?		पपह-हपव	чч д-дча	पपहूँ-हूँपव	"मपवपम"
पपक्ष! पवक्ष?	पपर्दृं! पवर्दृं?	-	पपक़-क़पव	पपड्र-ड्रपव	पपहॄ-हॄपव	"यपवपय"
पपज्ञ! पवज्ञ?	पपट्टं! पवट्टं?	पपक-कपव	पपख़-ख़पव	पपद्र-द्रपव	पपहुँ-हुँपव	"रपवपर"
	पपट्टा पवट्ट?	पपख-खपव	पपग़-ग़पव	पपद्र-द्रप व	पपहूँ-हूँपव	"लपवपल"
पपअ! पवअ?	पपठ्ठं! पवठ्ठं?	पपग-गपव	पपज़-ज़पव	पपर्-रूपव	पपरुँ-रुँपव	"ळपवपळ"
पपञे! पवञे?	पपड्टू! पवड्टू?	पपघ-घपव	पपड़-ड़पव	पपह्र-ह्रपव	पपरू-रूपव	"वपवपव"
पपॲ! पवॲ?	पपडूँ! पवडूँ?	पपङ-ङपव	पपढ़-ढ़पव	पपळू-ळूपव	पपदु-दुपव	"शपवपश"
पपइ! पवइ?	पपढूँ! पवढूँ?	पपच-चपव	पपफ़-फ़पव		पपदूँ-दूँपव	"षपवपष"
पपई! पवई?	पपद्धं! पवद्धं?	पपछ-छपव	पपय़-य़पव	पपक्त-क्तपव	पपर्वे-द्रुपव	"सपवपस"
पपउ! पवउ?	पपद्गः पवद्गः?	पपज-जपव	पपक्ष-क्षपव	पपदू-दूपव		"हपवपह"
पपऊ! पवऊ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपझ-झपव	पपज्ञ-ज्ञपव	पपदृ-दृपव	-	"क़पवपक़"
पपए! पवए?	पपद्भ! पवद्भ?	पपञ-ञपव		पपट्ट-ट्टपव	"कपवपक"	"ख़पवपख़"
पपऐ! पवऐ?	पपद्वं! पवद्वं?	पपट-टपव	पपअ-अपव	पपट्ट-ट्रपव	"खपवपख"	"ग़पवपग़"
पपऍ! पवऍ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपठ-ठपव	पपऄ-ऄपव	पपठु-ठुपव	"गपवपग"	"ज़पवपज़"
पपऎ! पवऎ?	पपद्। पवद्द?	पपड-डपव	पपॲ-ॲपव	पपड्ड-ड्डपव	"घपवपघ"	"ड़पवपड़"
पपआ! पवआ?	पपष्ट! पवष्ट?	पपढ-ढपव	पपइ-इपव	पपडु-ड्रुपव	"ङपवपङ"	"ढ़पवपढ़"
पपओ! पवओ?	पपल्ज! पवल्ज?	पपण-णपव	पपई-ईपव	पपढ़ु-ढ़ुपव	"चपवपच"	"फ़पवपफ़"
पपऔ! पवऔ?	पपष्ठ! पवष्ठ?	पपत-तपव	पपउ-उपव	पपद्ध-द्धपव	"छपवपछ"	"य़पवपय़"
पपऋ! पवऋ?	पपल्भ! पवल्भ?	पपथ-थपव	पपऊ-ऊपव	पपद्ग-द्गपव	"जपवपज"	"क्षपवपक्ष"
पपऋ! पवऋ?	पपह्न! पवह्न?	पपद-दपव	पपए-एपव	पपद्ध-द्वपव	"झपवपझ"	"ज्ञपवपज्ञ"
पपलृ! पवलृ?	पपह्नं! पवह्नं?	पपध-धपव	पपऐ-ऐपव	पपद्भ-द्भपव	"ञपवपञ"	
पपॡ! पवॡ?	पपह्न! पवह्न?	पपन-नपव	पपऍ-ऍवव	पपद्ग-द्वपव	"टपवपट"	"अपवपअ"
	पपह्नं! पवह्नं?	पपप-पपव	पपऎ-ऎपव	पपद्ध-द्धपव	"ठपवपठ"	"अपवपअ"

"ॲपवपॲ"	"ड्रुपवपड्डु"	Num-punct spacing	li Vowel sign - base	पपहिपपहिंपपर्हिपप
"इपवपइ"	"ढ्ढॅपवपढ्ढॅ"		पपकिपपकिंपपर्किपप	पपक्षिपपक्षिंपपर्क्षिपप
"ईपवपई"	"द्धॅपवपद्ध"	पवप ₹१०१ वपव	पपखिपपखिंपपर्खिपप	पपज्ञिपपज्ञिंपपर्ज्ञिपप
"उपवपउ"	"द्रपवपद्ग"	पवप ₹२०१ वपव 	पपगिपपगिंपपर्गिपप	
"ऊपवपऊ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹३०१ वपव	पपघिपपघिंपपर्घिपप	
"एपवपए"	"द्भपवपद्भ"	पवप ₹४०१ वपव	पपङिपपङिंपपर्ङिपप	
"ऐपवपऐ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹५०१ वपव	पपचिपपचिंपपर्चिपप	
"ऍपवपऍवव	"द्धपवपद्ध"	पवप ₹६०१ वपव	पपछिपपछिंपपर्छिपप	
"ऎपवपऐ"	"द्दंपवपद्दँ"	पवप ₹७०१ वपव		
"आपवपआ"	"ष्टपवपष्ट"	पवप ₹८०१ वपव	पपजिपपजिंपपर्जिपप	
"ओपवपओ"	"ल्जपवपल्ज"	पवप ₹९०१ वपव	पपझिपपझिंपपर्झिपप	
"ओपवपऔ"	"ष्ठपवपष्ठ"		पपञिपपञिंपपर्ञिपप	
"ऋपवपऋ"	"त्भपवपत्भ"	०००,०१०,०११	पपटिपपटिंपपर्टिपप	
"ऋपवपऋ"	"ह्रपवपह्न"	००१,०१०,१११	पपठिपपठिंपपर्ठिपप	
"ल्पवपल्"	"ह्रपवपह्न"	००२,०१०,२११	पपडिपपडिंपपर्डिपप	
		००३,०१०,३११	पपढिपपढिंपपर्ढिपप	
"ॡपवपॡ"	"ह्रपवपह्न" "नामान"	००४,०१०,४११	पपणिपपणिंपपर्णिपप	
""	"ह्रपवपह्न"	००५,०१०,५११	पपतिपपतिंपपर्तिपप	
"ङ्रपवपङ्र"	II	००६,०१०,६११	पपथिपपथिंपपर्थिपप	
"छ्रपवपछ्र" "	"हुपवपहु"	००७,०१०,७११	पपदिपपदिंपपर्दिपप	
"ट्रपवपट्र"	"हूपवपहू" "	००८,०१०,८११	पपधिपपधिंपपर्धिपप	
"ठ्रपवपठ्र" "	"हप वपह "	००९,०१०,९११	पपनिपपनिंपपर्निपप	
"ड्रपवपड्र"	"हृपवपहृ"	., . ,	पपपिपपपिंपपर्पिपप	
"ढ्रपवपढ्र"	"ह्रुपवपह्रु"	000.080.088	पपफिपपफिंपपर्फिपप	
"द्रपवपद्र"	"हूपवपहू"	009.090.999	पपबिपपबिंपपर्बिपप	
"रूपवपरू"	"रुपवपरु"	007.080.788	पपभिपपभिंपपर्भिपप	
"ह्रपवपह्र"	"रूपवपरू"		पपमिपपमिंपपर्मिपप	
"ळ्रपवपळ्र"	"दुपवपदु"	003.090.399	पपयिपपयिंपपर्यिपप	
	"दूपवपदू"	00%,080,888	पपरिपपरिंपपरिंपप	
"क्तपवपक्त"	"दृपवपदृ"	004.080.488	पपलिपपलिंपपर्लिपप	
"दूपवपदू"		००६.०१०.६११	पपळिपपळिंपपळिंपप	
"दृपवपदृ"		006.080.088	पपविपपविंपपर्विपप	
"ट्टंपवपट्टं"		००८.०१०.८११		
"द्रपवपट्ट"		999.090.900	पपशिपपशिंपपर्शिपप	
"ठुपवपठु"			पपषिपपषिंपपर्षिपप	
81418 "ਵਸ਼ਰਸ਼ਵ"			पपसिपपसिंपपर्सिपप	

li Vowel sign	पपक्त्यिपप	पपर्ग्बिपप	पपङ्खींपप	पपछ्विपप	पपर्ट्रिपप	पपर्सिपप	पपर्सिपप
clusters	पपर्क्त्विपप	पपर्ग्भिपप	पपर्ङ्गिपप	पपर्ज्किपप	पपट्टींपप	पपर्लिपप	पपर्खिपप
पपर्क्किपप	पपर्क्यिपप	पपर्ग्मिपप	पपङ्गीपप	पपर्ज्जिपप	पपर्ट्विपप	पपर्त्यिपप	पपर्द्रिपप
पपर्क्षिपप	पपक्स्टिपप	पपर्ग्यिपप	पपर्ङ्घिपप	पपर्ज्झिपप	पपट्वींपप	पपर्त्रिपप	पपर्द्विपप
पपर्क्यिपप	पपक्स्डिपप	पपर्ग्रिपप	पपङ्घींपप	पपर्ज्ञिपप	पपर्ट्रिपप	पपर्ल्लिपप	पपर्द्ध्यिपप
पपर्क्यिपप	पपक्स्तिपप	पपर्ग्लिपप	पपर्ङ्चिपप	पपर्ज्तिपप	पपर्ट्रीपप	पपर्त्विपप	पपर्द्विपप
पपक्छिंपप	पपक्स्पिपप	पपर्ग्विपप	पपर्ङ्क्षपप	पपर्ज्दिपप	पपर्ट्रिपप	पपर्त्सिपप	पपर्द्ञ्यिपप
पपर्क्जिपप	पपक्स्प्रिपप	पपर्ग्सिपप	पपङ्क्रींपप	पपर्ज्निपप	पपर्वठ्यपप	पपर्क्यिपप	पपर्ध्किपप
पपक्झिंपप	पपर्क्सिपप	पपर्ग्धिपप	पपर्ङ्क्रिपप	पपर्ज्बिपप	पपर्ड्विपप	पपर्त्क्रिपप	पपर्ध्यिपप
पपर्क्टिपप	पपक्स्प्र्लपप	पपर्ग्धिपप	पपर्झिपप	पपर्ज्मिपप	पपर्ड्विपप	पपर्त्सिपप	पपर्ध्निपप
पपर्क्ठिपप	पपर्ख्खिपप	पपग्र्निपप	पपर्ड्यिपप	पपर्ज्यिपप	पपर्ड्रिपप	पपर्त्र्ङ्मपप	पपर्ध्यिपप
पपर्क्डिपप	पपर्ख्टिपप	पपग्भिर्यपप	पपर्ङ्रिपप	पपर्ज़िपप	पपर्ड्ड्यिपप	पपर्त्ख्रिपप	पपर्ध्रिपप
पपर्क्टिपप	पपर्ख्डिपप	पपर्ग्रिपप	पपर्च्किपप	पपर्ज्लिपप	पपर्ढ्विपप	पपर्त्ख्रिपप	पपर्ध्लिपप
पपर्क्णिपप	पपर्ख्णिपप	पपग्म्यिपप	पपर्च्खिपप	पपर्ज्विपप	पपर्ढीपप	पपर्त्यिपप	पपर्ध्विपप
पपर्क्तिपप	पपर्ख्तिपप	पपग्र्ल्यिपप	पपर्च्चिपप	पपर्झ्किपप	पपर्द्धिपप	पपर्ल्पिपप	पपर्ध्सिपप
पपर्क्थिपप	पपर्ख्दिपप	पपर्ध्यिपप	पपर्च्टिपप	पपर्झ्गिपप	पपर्ढ्यिपप	पपर्त्प्लिपप	पपर्न्किपप
पपर्क्टिपप	पपर्ख्निपप	पपर्घ्जिपप	पपर्च्छिपप	पपर्झ्यिपप	पपर्वृट्यिपप	पपर्त्म्यिपप	पपर्न्खिपप
पपर्क्निपप	पपर्खिपप	पपर्घ्टिपप	पपर्च्हिपप	पपर्झिपप	पपर्ण्टिपप	पपर्त्स्निपप	पपर्न्यिपप
पपर्क्यिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्विपप	पपर्च्हिपप	पपर्झ्तिपप	पपर्ण्टीपप	पपर्त्स्यिपप	पपर्म्छिपप
पपर्क्षिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्डिपप	पपर्च्णिपप	पपर्झ्निपप	पपर्ण्ठिपप	पपर्त्स्वपप	पपर्न्जिपप
पपर्क्बिपप	पपर्ख्रिपप	पपर्घ्णिपप	पपर्च्तिपप	पपर्झ्यिपप	पपर्ण्डिपप	पपि्रस्यपप	पपर्झिपप
पपर्क्सिपप	पपर्ख्लिपप	पपर्घ्तिपप	पपर्च्थिपप	पपर्झिपप	पपर्ण्हिपप	पपर्थ्किपप	पपर्न्टिपप
पपर्क्सिपप	पपर्ख्विपप	पपर्घ्दिपप	पपर्च्दिपप	पपर्झ्लिपप	पपर्णिपप	पपर्थिपप	पपर्न्ठिपप
पपर्क्यिपप	पपर्ख्शिपप	पपर्घ्निपप	पपर्च्धिपप	पपर्झ्विपप	पपर्ण्तिपप	पपर्थ्मिपप	पपर्न्डिपप
पपर्क्रिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्बिपप	पपर्जिपप	पपर्झिपप	पपर्ण्यिपप	पपर्थ्यिपप	पपर्न्हिपप
पपर्क्लिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्मिपप	पपर्च्यिपप	पपर्ञ्चिपप	पपर्ण्रिपप	पपर्थिपप	पपर्न्तिपप
पपर्क्विपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्यिपप	पपर्चिपप	पपर्ज्जिपप	पपर्ण्विपप	पपर्थ्लिपप	पपर्स्थिपप
पपक्शिपप	पपर्ग्किपप	पपर्चिपप	पपर्च्लिपप	पपञ्शिपप	पपर्त्किपप	पपर्थ्विपप	पपर्न्हिपप
पपर्क्षिपप	पपर्गिपप	पपर्घ्लिपप	पपर्च्विपप	पपञ्चिंपप	पपर्त्खिपप	पपर्थ्सिपप	पपर्स्थिपप
पपर्क्सिपप	पपर्ग्जिपप	पपर्घ्विपप	पपर्च्सिपप	पपञ्ज्यिपप	पपर्त्तिपप	पपर्द्रिपप	पपर्निपप
पपर्क्हिपप	पपर्ग्णिपप	पपर्घ्सिपप	पपर्च्यिपप	पपर्ट्ट्रिपप	पपर्त्थिपप	पपर्द्धिपप	पपर्न्पिपप
पपर्क्ळिपप	पपर्ग्तिपप	पपघ्ल्यिपप	पपर्च्मिपप	पपट्टींपप	पपर्लिपप	पपर्ह्विपप	पपर्न्फिपप
पपक्क्यिपप	पपर्ग्दिपप	पपर्ङ्किपप	पपर्च्यिपप	पपर्ट्विपप	पपर्त्यिपप	पपर्द्धिपप	पपर्न्बिपप
पपर्क्त्रिपप	पपर्ग्धिपप	पपङ्कींपप	पपर्छ्यिपप	पपर्ट्वीपप	पपर्त्फिपप	पपर्द्धिपप	पपर्सिपप
	पपर्ग्निपप	पपङ्खिपप	पपर्छ्रिपप	पपर्ट्यिपप	पपर्त्बिपप	पपद्भिपप	पपर्मिपप

पपर्न्यिपप	पपर्धिपप	पपर्म्बिपप	पपर्ल्थिपप	पपर्स्जिपप	पपर्ह्विपप
पपर्व्रिपप	पपर्जिपप	पपर्मिपप	पपर्व्हिपप	पपर्स्टिपप	पपर्ळियपप
पपर्ल्लिपप	पपर्प्पिपप	पपर्म्मिपप	पपर्ल्पिपप	पपर्स्ठिपप	पपर्ळ्पिपप
पपर्न्विपप	पपर्प्भिपप	पपर्म्यिपप	पपर्ल्फिपप	पपर्स्डिपप	पपर्ळ्विपप
पपर्न्सिपप	पपर्मिपप	पपर्म्रिपप	पपर्ल्बिपप	पपर्स्हिपप	पपर्स्यिपप
पपर्न्हिपप	पपर्चिपप	पपर्म्लिपप	पपर्ल्भिपप	पपर्स्तिपप	पपर्स्मिपप
पपर्स्थिपप	पपर्प्रिपप	पपर्म्विपप	पपर्ल्मिपप	पपर्स्थिपप	पपर्स्विपप
पपर्स्विपप	पपर्प्लिपप	पपर्म्शिपप	पपर्ल्यिपप	पपर्स्दिपप	
पपन्म्यिपप	पपर्विपप	पपर्म्सिपप	पपर्ल्लिपप	पपर्स्निपप	
पपन्स्टिपप	पपर्ष्मिपप	पपर्म्हिपप	पपर्ल्विपप	पपर्स्पिपप	
पपन्स्यिपप	पपर्प्सिपप	पपर्म्यिपप	पपर्ल्सिपप	पपर्स्फिपप	
पपर्ह्यिपप	पपर्ळिपप	पपर्म्प्रिपप	पपर्ल्हिपप	पपर्स्बिपप	
पपन्जिंपप	पपर्प्यिपप	पपर्म्ब्यिपप	पपर्ल्लियपप	पपर्स्मिपप	
पपन्क्सिपप	पपर्फ्किपप	पपर्म्ब्रिपप	पपर्ल्ह्यिपप	पपर्स्यिपप	
पपन्त्र्यपप	पपर्फ्जिपप	पपर्म्थिपप	पपर्ल्क्यिपप	पपर्स्रिपप	
पपन्त्सिंपप	पपर्स्टिपप	पपर्भ्भिपप	पपर्ल्थिपप	पपस्लिंपप	
पपर्स्थिपप	पपर्फ्तिपप	पपर्म्विपप	पपर्ल्ड्रिपप	पपर्स्विपप	
पपर्स्थिपप	पपर्प्दिपप	पपर्य्यिपप	पपर्श्किपप	पपर्स्सिपप	
पपर्न्द्रिपप	पपर्म्निपप	पपर्ग्रिपप	पपर्श्खिपप	पपस्म्यिपप	
पपर्न्ह्रिपप	पपर्फिपप	पपर्लिपप	पपर्श्चिपप	पपर्स्क्रिपप	
पपन्ध्यिपप	पपर्म्मिपप	पपर्व्यिपप	पपर्श्छिपप	पपस्त्र्येपप	
पपर्स्थिपप	पपर्प्यिपप	पपर्व्रिपप	पपर्श्टिपप	पपर्स्थ्यपप	
पपर्स्मिपप	पपर्फ्रिपप	पपर्ल्लिपप	पपर्श्तिपप	पपस्म्यिपप	
पपन्स्म्यपप	पपर्फ्लिपप	पपर्व्सिपप	पपर्श्निपप	पपस्त्विपप	
पपर्किपप	पपर्म्शिपप	पपर्व्हिपप	पपर्श्विपप	पपर्स्प्रिपप	
पपर्झिपप	पपर्भ्निपप	पपर्ल्किपप	पपर्श्मिपप	पपस्र्विपप	
पपर्प्टिपप	पपर्भ्यिपप	पपर्ल्खिपप	पपर्श्यिपप	पपर्ह्लिपप	
पपर्खिपप	पपर्भ्रिपप	पपर्ल्गिपप	पपर्श्रिपप	पपर्ह्तिपप	
पपर्प्टीपप	पपर्भ्लिपप	पपर्ल्चिपप	पपर्श्लिपप	पपर्ह्यिपप	
पपर्खिपप	पपर्भ्विपप	पपर्ल्जिपप	पपर्श्विपप	पपर्ह्मिपप	
पपर्खिपप	पपर्भ्यिपप	पपर्ल्टिपप	पपर्शिपप	पपर्ह्यिपप	
पपर्णिपप	पपर्म्तिपप	पपर्ल्विपप	पपर्श्र्यिपप	पपर्ह्मिपप	
पपर्प्तिपप	पपर्म्दिपप	पपर्ल्डिपप	पपर्स्किपप	पपर्ह्रिपप	
पपर्थिपप	पपर्म्निपप	पपर्ल्डिपप	पपर्स्खिपप	पपर्ह्लिपप	
पपर्प्दिपप	पपर्म्पिपप	पपर्ल्तिपप	पपर्स्छिपप	पपर्ह्मिपप	

Half-to-base kerns

पपक्कपपक्खपपक्गपपक्घपपक्छपपक्चप पक्छपपक्जपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठपपक्डप पक्ढपपक्णपपक्कपपक्थपपक्दपपक्थपपक्नप पक्नपपक्पपपक्कपपक्षपपक्मपपक्यप पक्रपपक्रपपक्लपपक्छपपक्वप पक्शपपक्षपपक्सपपक्हपपक्कपपक्खपपक्गप पक्जपपक्डपपक्डपपक्कपपक्यपप

पपक्कपपख्खपपखापपख्यपपख्डपपख्यप पख्छपपख्जपपख्झपपख्अपपख्डपपख्डप पख्डपपख्णपपख्कपपख्अपपख्डपपख्अपपख्जप पद्भपपख्मपपख्कपपख्अपपख्मपपख्यप पद्भपपख्मपपख्कपपख्कपपख्कपपख्शप पख्मपख्सपपद्भपपद्भपपख्कपपख्नपप्रजप पद्भपपख्सपपख्कपपख्कपपख्नपप्रजप पद्भपपख्कपपख्कपपख्यपप

पपग्कपपग्खपपग्गपप पग्छपपग्जपपग्झपपग्अपपग्टपपग्ठपपग्डप पग्हपपग्जपपग्कपपग्खपपग्भपपग्भपपग्यपपग्रप पग्तपपग्जपपग्कपपग्खपपग्भपपग्भपपग्यपपग्रप पग्सपपग्हपपग्कपपग्खपपग्गपपग्जपपग्डप पग्सपपग्रकपपग्खपपग्गपपग्जपपग्डप पग्रकपपग्रकपपग्खपपग्गपपग्जपपग्डप पग्रकपपग्रकपपग्यपप

पपष्कपपष्खपपघ्मपपघ्मपपद्भपपघ्मप पघ्छपपघ्मपपद्भपपघ्मपपद्भपपघ्मप पद्भपपघ्मपपघ्मपपद्भपपध्मपपघ्मप पद्मपपघ्मपपघ्मपपद्भपपध्मपपघ्मप पद्मपपद्भपपद्भपपद्भपपद्भपपद्भप पद्भपपघ्मपपद्भपपद्भपपद्भपपद्भपपा पद्मपपद्भपपद्भपपद्भपपद्भपप पपक्कपपख्खपपग्गपपख्यपपद्धपपच्यप पच्छपपच्जपपद्धपपच्अपपच्टपपच्छप पद्धपपच्णपपन्तपपख्यपपद्धपपच्यप पज्ञपपच्यपपच्कपपच्खपपच्यप पग्नपप्रपप्क्लपपच्छपपच्यपपद्भप पच्यपप्रप्रप्रप्क्षपपच्छपपच्यपप्राप पच्यपप्रस्पपद्धपपच्यपप्रप्रप पद्धपपच्छपपच्यपप्रय

पपछकपपछखपपछगपपछघपपछङपपछचप पछछपपछजपपछझपपछञपपछटपपछठप पछडपपछढपपछणपपछतपपछथपपछदप पछधपपछनपपछनपपछपपछभपपछबप पछभपपछनपपछ्चपपछूपपछऱपपछलप पछळपपछ्कपपछ्चपपछशपपछ्मप पछहपपछकपपछखपपछगपपछजपपछड़प पछढपपछकपपछखपप

पपज्कपपज्खपपज्गपपज्घपपज्ङपपज्चप पज्छपपज्जपपज्झपपञ्चपपज्टपपज्छप पज्हपपज्णपपज्तपपज्थपपज्सपपज्मप पज्नपपज्पपपज्भपपज्बपपज्भपपज्यप पज्जपपज्यपज्लपपज्छपपज्छपपज्यपपज्शप पज्यपपज्सपपज्हपपज्कपपज्खपपज्गपपज्जप पज्डपपज्सपपज्सपपज्यपप

पपइकपपइखपपइगपपइघपपइङपपइचप पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइटप पइटपपइग्गपपइतपपइथपपइदपपइथपपइनप पइनपपइमपपइमपपइबपपइभपपइमपपइयप पझपपइसपपइलपपइळपपइलपपइशप पइमपपइसपपइहपपइकपपइखपपइग्गपपइजप पइहपपइट्रपपइसपपइसपप पपञ्कपपञ्खपपञ्गपपञ्चपपञ्ङपपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्झपपञ्ञपपञ्दपपञ्चप पञ्दपपञ्णपपञ्कपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्यपपञ्कपपञ्चपपञ्मपपञ्चप पञ्जपपञ्सपपञ्कपपञ्कपपञ्चपपञ्जप पञ्चपपञ्सपपञ्हपपञ्कपपञ्खपपञ्जप पञ्डपपञ्कपपञ्कपपञ्जप

पपट्कपपट्खपपट्गपपट्घपपट्डपपट्चप पट्छपपट्जपपट्झपपट्ञपपट्टपपट्टप पट्ढपपट्णपपट्तपपट्थपपट्दपपट्धपपट्नप पट्नपपट्पपपट्फपपट्बपपट्भपपट्चप पट्नपपट्रपपट्लपपट्ळपपट्कपपट्गप पट्षपपट्सपपट्हपपट्कपपट्खपपट्गप पट्डपपट्कपपट्झप

पपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्घपपठ्ङपपठ्चप पठ्छपपठ्जपपठ्झपपठ्ञपपठ्टपपठ्ठप पठ्ढपपठ्णपपठ्तपपठ्थपपठ्दपपठ्धपपठ्नप पठ्नपपठ्पपपठ्फपपठ्बपपठ्भपपठ्मपपठ्यप पठ्रपपठ्रपपठ्लपपठ्ळपपठ्ळपपठ्वपपठ्शप पठ्षपपठ्सपपठ्हपपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्जप पठ्डपपठ्हपपठ्फपपठ्यपप

पपड्कपपड्खपपड्गपपड्घपपड्डपपड्चप पड्छपपड्जपपड्झपपड्ञपपड्टपपड्ठपपड्डप पड्डपपड्णपपड्तपपड्थपपड्दपपड्धपपड्नप पड्नपपड्पपपड्फपपड्बपपड्भपपड्मपपड्यप पड्रपपड्रपपड्लपपड्ळपपड्ळपपड्वपपड्शप पड्षपपड्सपपड्हपपड्कपपड्खपपड्गपपड्जप पड्डपपड्सपपड्कपपड्खपपड्गपपड्जप

पपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्घपपढ्ङपपढ्चप पढ्छपपढ्जपपढ्झपपढ्ञपपढ्टपपढ्ठपपढ्डप पढ्षपपढ्णपपढ्तपपढ्थपपढ्दपपढ्धपपढ्नप पढ्नपपढ्पपपढ्फपपढ्बपपढ्भपपढ्मपपढ्यप पढ्नपपढ्रपपढ्लपपढ्ळपपढ्ञपपढ्गप पढ्षपपढ्सपपढ्हपपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्जप पढ्डपपढ्डपपढ्डफपपढ्खपप

पपण्कपपण्खपपण्गपपण्डपपण्डपपण्चप पण्डपपण्जपपण्झपपण्ञपपण्डपपण्डप पण्डपपण्जपपण्कपपण्डपपण्डपपण्डप पण्जपपण्यपण्कपपण्डपपण्डपपण्डप पण्जपपण्यपण्कपपण्डपपण्डपपण्डप पण्डपपण्डपपण्कपपण्डपपण्डपपण्जप पण्डपपण्डपपण्कपपण्यपप

पपत्कपपत्खपपतगपपत्थपपत्ङपपत्चपपत्छप पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्ढपपत्गप पत्तपपत्थपपत्दपपत्थपपत्नपपत्नपपत्पपत्भप पत्बपपत्भपपत्मपपत्यपपत्रपपत्त्रपपत्लपप पत्ळपपत्वपपत्शपपत्सपपत्सपपत्हपपत्कपपत्खप पत्गपपत्नपपत्इपपत्कपपत्सपपत्यपप

पर्द्धततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष तक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मत तक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मत तक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मत तक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मत तक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मत पपद्कपपद्खपपद्वपपद्वपपद्वप पद्छपपद्जपपद्झपपद्ञपपद्टपपद्ठप पद्डपपद्ठपपद्णपपद्तपपद्थपपद्वप पद्नपपद्नपपद्पपपद्फपपद्वपपद्वप पद्नपपद्नपपद्पपपद्कपपद्वप पद्शपपद्षपपद्सपपद्हपपद्कपपद्खप पद्शपपद्जपपद्डपपद्कपपद्खप पद्गपपद्जपपद्डपपद्कपपद्यप

पपन्कपपन्खपपन्गपपन्यपपन्ङपपन्यपपन्छप पन्जपपन्झपपन्ञपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्ढप पन्णपपन्तपपन्थपपन्दपपन्थपपन्नपपन्नपपन्यप पन्फपपन्बपपन्भपपन्मपपन्यपपन्नपपन्त्रपपन्त्रप पन्ळपपन्ळपपन्वपपन्शपपन्षपपन्सपपन्हपपन्कप पन्खपपन्गपपन्जपपन्डपपन्द्रपपन्सपपन्सपप

पपन्कपपन्खपपन्गपपन्धपपन्ङपपन्चपपन्छप पन्जपपन्झपपन्ञपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्छप पन्णपपन्तपपन्थपपन्दपपन्थपपन्नपपन्नपपन्य पपन्फपपन्बपपन्भपपन्मपपन्यपपञ्चपपन्त्रपपन्लप पन्ळपपन्ळपपन्वपपन्शपपन्सपपन्सपपन्हपपन्कप पन्खपपन्गपपन्जपपन्डपपन्कपपन्सपपन्यपप

पपप्कपपप्खपपपापपध्यपपप्कपपप्चपपप्छप पप्जपपप्झपपप्जपपप्टपपप्ठपपप्डपपप्यपप्पप पप्तपपध्यपपप्दपपध्यपप्रपप्जपपप्यपपप्कप पप्जपपप्भपपप्यपपप्रपप्रपप्लपपप्कप पप्जपपप्वपप्शपपप्षपपप्सपपप्हपपप्कपपप्खप पपापपप्जपपप्डपपप्कपप्कपप्यपप पपफ्कपपफ्खपपफापपफ्घपपफ्डपपफ्चप पफ्छपपफ्जपपफ्झपपफ्ञपपफ्टपपफ्ठपपफ्डप पफ्डपपफ्णपपफ्तपपफ्थपपफ्दपपफ्धपपफ्नप पफ्नपपफ्पपपफ्फपपफ्बपपफ्शपपफ्मपपफ्यप पफ्रपपफ्रपपफ्लपपफ्ळपपफ्ळपपफ्नपपफ्शप पफ्षपपफ्सपपफ्हपपफ्कपपफ्खपपफापफ्जप पफ्डपपफ्डपपफ्कपपफ्यपप

पपक्कपपब्खपपब्गपपब्धपपव्झपपव्यपपब्छप पक्जपपव्झपपव्सपपद्धपपव्झपपव्झपपव्मप पव्जपपव्भपपव्सपपव्यपपत्नपपव्झपपव्झपपव्सप पव्झपपव्भपपव्सपपव्सपपव्झपपव्झपपव्झप पव्झपपव्झपपव्झपपव्सपपव्झपप प्रवापपञ्जपपव्झपपव्झपपक्सपप

पपभ्कपपभ्खपपभापपश्चपपभ्ङपपभ्चपपभ्छप पभ्जपपभ्झपपभ्ञपपभ्दपपभ्छपपभ्डपपभ्दप पभ्जपपभ्कपपभ्खपपभ्सपपभ्यपपभ्रप पभ्यपपभ्कपपभ्खपपभ्अपपभ्यपपभ्रप पभ्सपपभ्हपपभ्कपपभ्खपपभापपभ्जपपभ्रप पभ्दपपभ्कपपभ्कपपभ्खपपभापपभ्जपपभ्डप पभ्दपपभ्कपपभ्यपप

पपम्कपपम्खपपम्गपपम्घपपम्ङपपम्चपपम्छप पम्जपपम्झपपम्ञपपम्दपपम्छपपम्हपपम्दप पम्णपपम्तपपम्थपपम्दपपम्थपपम्नपपम्नपपम्यप पम्कपपम्खपपम्भपपम्भपपम्यपपम्रपपम्रपपम्लप पम्कपपम्खपपम्गपपम्जपपम्सपपम्हप पम्कपपम्खपपम्गपपम्जपपम्इपपम्हपपम्सप पम्यपप

पपटकपपटखपपटगपपट्यपपट्डपपट्डप पटजपपट्झपपटअपपट्टपपट्ठपपटडपपट्डप पट्जपपट्झपपटअपपट्टपपट्अपपटनपपट्नपपट्यप पटकपपट्अपपट्अपपट्यपप्रयपप्रयपट्सप पटकपपट्अपपट्अपपटआपपट्सपपट्सप पटकपपट्खपपट्यपपट्यपपट्डपपट्सप पटकपपट्खपपट्यपपट्यपपट्डपपट्डपपट्सप पट्यपप

पपर्कपपर्खपपर्गपपर्घपपर्डपपर्चपपर्छपपर्जप पर्झपपर्ञपपर्टपपर्ठपपर्डपपर्ढपपर्णपपर्तपपर्थप पर्दपपर्धपपर्नपपर्नपपर्पपपर्फपपर्बपपर्भपपर्मप पर्यपपर्रपप्रतप्रतिपपर्छपपर्छपपर्वपपर्शप पर्षपपर्सपपर्हपपर्कपपर्खपपर्गपपर्जपपर्डपपर्दप पर्फपपर्यपप

पपक्कपपखपपगपपञ्चपपङ्कपपञ्चपपछप पन्जपपझपपन्अपपन्टपपन्ठपपङ्कपपञ्चप पन्तपपञ्चपपन्दपपञ्चपपग्रपपग्रपप्रमपञ्चप पञ्चपपञ्चपपश्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपन्वपपश्चपपञ्चपपञ्चप पग्नपपञ्जपपङ्कपपन्द्वपपञ्चप

पपल्कपपल्खपपल्गपपल्घपपल्डपपल्चपपल्खप पल्जपपल्झपपल्ठपपल्टपपल्ठपपल्डपपल्खप पल्जपपल्तपपल्थपपल्दपपल्थपपल्नपपल्नप पल्पपपल्फपपल्बपपल्भपपल्मपपल्यपपल्लप पल्सपपल्कपपल्ळपपल्खपपल्शपपल्भप पल्सपपल्हपपल्कपपल्खपपल्गपपल्जपपल्डप पल्सपपल्हपपल्कपपल्खपपल्गपपल्जपपल्डप पपळकपपळखपपळगपपळघपपळङपपळचप पळछपपळजपपळझपपळञपपळटपपळदप पळघपपळचपपळणपपळतपपळथपपळदप पळभपपळनपपळनपपळपपळभपपळअप पळभपपळमपपळथपपळूपपळऱपपळलपपळळप पळकपपळवपपळशपपळषपपळसपपळहप पळकपपळखपपळग्रापपळजपपळइप पळकपपळखपपळग्रापप

पपळकपपळखपपळगपपळघपपळङपपळचप पळछपपळजपपळझपपळञपपळटपपळठप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळभपपळनपपळनपपळपपळभपळकप पळभपपळमपपळयपपळपपळशपपळलप पळढपपळकपपळवपपळशपपळबपपळसप पळहपपळकपपळखपपळग्रापपळजपपळइप पळढपपळफपपळखपप

पपत्कपपत्खपपञापपत्यपपत्कपपत्यपपत्छप पत्जपपत्झपपत्ञपपत्यपपत्ठपपत्कपपत्कपप पत्नपपत्थपपत्दपपत्थपपत्नपपत्नपपत्भप पत्वपपत्भपपत्नपपत्यपपत्रपपत्नपपत्कप पत्कपपत्वपपत्शपपत्थपपत्सपपत्हपपत्कप पत्खपपञापपञ्जपपत्कपपत्कपपत्सपप

पपश्कपपश्खपपश्गपपश्घपपश्ङपपश्चपपश्छप पश्जपपश्झपपश्जपपश्टपपश्ठपपश्डपपश्टप पश्णपपश्तपपश्थपपश्दपपश्धपपश्नपपश्नप पश्पपश्कपपश्खपपश्मपपश्यपपश्रप पश्रपपश्लपपश्कपपश्खपपश्गपपश्जपपश् पश्सपपश्हपपश्कपपश्खपपश्गपपश्जपपश्डप पश्टपपश्कपपश्यपप पपष्कपपष्खपपषापपष्घपपष्डपपष्कपपष्यपप पष्जपपष्ट्रपपष्ट्रपपष्यपप्रपपष्टपपष्कप पष्जपपष्ट्रपपष्ट्रपपष्यपप्रपपष्ट्रपपष्कप पष्डपपष्ट्रपपष्ट्रपपष्ट्रपपष्कप पष्डपपष्ट्रपपष्ट्रपपष्ट्रपपष्कप पष्डपपष्ट्रपपष्ट्रपपष्ट्रपपष्कप पष्डिपपष्ट्रपपष्ट्रपपष्ट्रपपष्कप पष्डिपपष्ट्रपपष्ट्रपपष्ट्रपपष्कप

पपस्कपपस्खपपस्गपपस्थपपस्ङपपस्चप पस्छपपस्जपपस्झपपस्ञपपस्टपपस्ठपपस्डप पस्डपपस्णपपस्तपपस्थपपस्दपपस्थपपस्नप पस्नपपस्पपपस्फपपस्बपपस्भपपस्मपपस्यप पस्नपपस्तपपस्लपपस्ळपपस्छपपस्वपपस्शप पस्थपपस्सपपस्हपपस्कपपस्खपपस्गपपस्जप पस्डपपस्हपपस्कपपस्यपप

पपह्कपपह्खपपह्मपपह्यपपह्डपपह्चपपह्छप पह्जपपह्झपपह्अपपहटपपह्ठपपह्डपपह्डप पह्लपपह्तपपह्थपपह्दपपह्थपपह्लपपह्मपप्ट्मप पह्मपपह्बपपह्भपपह्मपपह्मपपह्मप पह्ळपपह्ळपपह्लपपह्शपपह्मपपह्सपपह्हप पह्कपपह्खपपह्मापपह्जपपह्डपपह्डप पह्मपपह्यपप

पपक्कपपक्खपपक्रापपक्चपपक्छपपक्चप पक्छपपक्जपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठपपक्डप पक्रपपक्रपपक्तपपक्थपपक्रपपक्षपपक्रपप पक्षपपक्षपपक्षपपक्मपपपपक्रपपक्रपपक्रपपक्षप पक्षपपवपपक्शपप पपक्षपपक्सपपक्रपप

less common half-forms

पपटकपपटखपपटगपपट्यपपटहपपट्यपपटछप पटजपपटझपपटअपपटटपपटठपपटहपपटढप परगपपटतपपट्यपपटदपपट्यपपटजपपट्यप पर्यक्रपपरखपपट्यपपट्यपपटलप परळपपर्यपपटशपप पपर्यपपटलप परळपपर्यप्यवपपरशपप पपर्यपपरसपप

पपद्मकपपद्मखपपद्मगपपद्मघपपद्मङपपद्मचपपद्मछप पद्मजपपद्मझपपद्मञपपद्मटपपद्मठपपद्मडपपद्मढप पद्मणपपद्मतपपद्मथपपद्मदपपद्मधपपद्मनपपद्मपप पद्मफपपद्मबपपद्मभपपद्ममपप पपद्मयपपद्मलप पद्मळपपद्मपपवपपद्मशपपपद्मषपपद्मसपपद्महपप

पपरक्रपपरखपपरगपपर्थपपरहरपपर्थपपरछप परजपपरस्पपरक्रपपरद्यपपर्थपपरहपपरद्यप परगपपरतपपरथपपरद्यपपर्थपपरनपपर्यप पर्यक्रपपर्व्यपपर्थभपपरमप परक्षपपर्यपपरशपप पपर्थपपरसप पर्रिपर्यस्यपर्थभप

पपक्रकपपक्रखपपक्रगपपक्रघपपक्रङपपक्रचप पक्रछपपक्रजपपक्रझपपक्रञपपक्रटपपक्रठप पक्रडपपक्रटपपक्रणपपक्रतपपक्रथपपक्रदप पक्रधपपक्रनपपक्रपपपक्रफपपक्रबपपक्रभपपक्रमप पपक्रयपपक्रलपपक्रळपपक्रपपवपपक्रशप पपक्रथपपक्रसपपक्रहपप

पपञ्कपपञ्ज्वपपञ्जापपञ्चपपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्झपपञ्जपपञ्चप पञ्डपपञ्चपपञ्जापपञ्जपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्चपपञ्चप पञ्चपपञ्जपपञ्जपपञ्चपप पपक्रपपख्रपपग्रापपग्रापपग्रापपग्रापपग्रप पग्रापपद्भापपग्रापपग्रपपग्रपपग्रप पग्रापपग्रापपग्रपपग्रपपग्रप पग्रापपग्रापपभ्रापपग्रपप पपग्रपपग्राप पग्रापवपपग्रापप पपग्रपपग्रसपप

पपम्रमपम्खपपम्रापम्घपपम्हःपपम्चपपम्छप पम्रमपम्हापपम्भपम्द्रपपम्छपपम्ह्रप पम्रमपम्हापम्भपमम्द्रपपम्भपम्मप पम्रमपम्हापम्भपमम्भपम्भपम्ह्रपपम्भपम्ह्रप पम्रमपनम्भापम्भपम्भपम्हरपम

पपज्रकपपज्रखपपज्रापपज्रवपपज्रवपपज्रवप पज्रापपज्रवपपज्रवपपज्रवपज्रवपपज्रवप पज्रापपज्रवपपज्रथपपज्रवपपज्रवप पज्रकपपज्रवपपज्रभपपज्रवपपज्रवप पज्रवपज्रवपपज्रभपपज्रवपपज्रवप पज्रवपपज्रवपपज्रवपपज्रवपपज्रवप

पपइक्रपपइख्रपपइझापपइझ्यपइझ्यप पइछ्रपपइज्जपपइझापपइञ्जपपइट्टपपइठ्ठपपइड्टप पइद्धपपइझापपइतपपइअपपइद्सपपइअपपइनप पइझपपइझपपइअपपइअपपइसप पइल्लपपइळ्यपइझपवपपइअपपइअपपइसप पइह्रपप

पपञ्कपपञ्खपपञ्चापपञ्चापपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्चापपञ्चापपञ्चप पञ्चपपञ्चापपञ्चापपञ्चापपञ्चाप पञ्जपपञ्चापपञ्चापपञ्चापपञ्चाप पञ्जपपञ्चापपञ्चापपञ्चापपञ्चाप पञ्जपपञ्चापपञ्चापपञ्चापपञ्चाप पञ्चापपञ्चापपञ्चापपञ्चापपञ्चाप पञ्चापपञ्चाप पपण्कपपण्खपपण्गपपण्घपपण्डपपण्चपपण्खप पण्जपपण्झपपण्ञपपण्टपपण्ठपपण्डपपण्डप पण्णपपण्जपपण्थपपण्दपपण्धपपण्जपपण्जप पण्कपपण्जपपण्भपपण्जप पपण्यपपण्जप पण्ळपपण्रपवपपण्शपप पपण्रपपण्जप

पपःकपपःखपपःगपपश्चपपःखपपःखप पःजपपःखपपःञपपःद्यपग्छपपःखपपःगप पःजपपश्चपपःद्यपश्चपपःगपःगपःयपः पश्चपपःश्मपपः पपःश्यपपःश्चपपः पश्चपपःश्मपपःश्चपपःश्चपः पश्चपपःश्चपपःश्चपपः

पपश्र्वपपश्र्वपपश्रापपश्र्वपपश्र्वपपश्र्वपपश्र्वप पश्र्वपपश्र्वपपश्र्वपपश्र्वपपश्र्वपपश्र्वप पश्र्मपपश्र्वपपश्र्मपप पपश्र्यपपश्र्वप पश्र्मपश्र्वपपश्र्मपप पपश्र्यपपश्र्मप पश्र्वपश्र्मपवपपश्रापप पपश्र्वपपश्र्मपपश्र्मप

पप्रक्रपप्रख्यप्रभापप्रध्यप्रध्रपप्रख्यप्रध्यप्रध्यप्रध्यप्रध्यप्रध्यप्रध्यप्रध्यप्रध्यप्रध्यप्रध्यप्रध्यप्रभापप्

पपन्क्रपपन्खपपनापपन्चपपन्छप पन्जपपन्झपपन्अपपन्दपपन्छपपन्छप पन्गपपन्नपपश्चपपन्दपपश्चपपन्नपपन्मप पन्त्रपपश्चपपन्मपप पपन्चपपन्नपपन्नपपन्मप वपपन्नपप पपन्नपपन्नपपन्हपप

पप्रक्रपप्रखपप्रापप्रघपप्रङ्गपप्रचपप्रखप प्रजपप्रझपप्रञपप्रटपप्रजपप्रहपप्रखप प्रजपप्रथपप्रद्भपप्रथपप्रनपप्रपप्रफपप्रबप प्रभपप्रमपप पप्रयपप्रलपप्रखपप्रप्रपवप प्रशपप पप्रथपप्रसपप्रह्रपप

पपप्रकपपप्रखपपप्रगपपप्रघपपप्रङपपप्रचप पप्रखपपप्रजपपप्रझपपप्रञपपप्रटपपप्रठप पप्रडपपप्रखपपप्रणपपप्रतपपप्रथपपप्रदपपप्रथप पप्रनपपप्रयपपप्रकपपप्रखपपप्रभपपप्रमपप पपप्रयपपप्रलपपप्रखपपप्रथपपप्रशपप पपप्रथपपप्रलपपप्रहपप

पपक्रमपब्रखपपब्रापपब्र्घपपब्र्डपपब्र्घपपब्र्धप पब्र्जपपब्र्सपपब्र्मपपब्र्टपपब्र्डपपब्र्धप पब्र्णपपब्र्मपपब्र्धपपब्र्सपपब्र्मपपब्रमप पब्र्बपपक्रमपपब्रमपप पपब्र्यपपब्र्सपपब्र्यपव पपक्षापप पपब्र्षपपब्रस्मप